eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

बाल्मीकि रामायण में पर्यावरण : एक अन्वेषण

कु0 राधिका[1]
[1]शोध छात्रा– प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

पर्यावरण स्थायी मानवीय जीवन का आधार बनते हैं। वाल्मीकि रामायण में परिस्थितिकी तंत्र का सुंदर वर्णन मिलता है। इस लेख में पर्यावरण शब्द की व्यूत्पत्ती एवं अर्थ को परिभाषित किया गया है। पर्यावरण मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है इस पर विचार किया गया है। अनंतर प्रभु श्री राम की वनवास यात्रा के दौरान प्राप्त अयोध्या नगर से लेकर श्रीलंका तक भारतीय प्रायद्वीपीय वनों की वर्तमान स्थिति का विवरण दिया गया हैं। तत्पश्चात पर्वतों एवं नदियों का उल्लेख किया गया है। रामायण में वर्णित विभिन्न प्रजाति के जीव–जंतु एवं पेड़–पौधों का भी वर्णन किया गया है। महर्षि वाल्मीकि कृति रामायण केवल धार्मिक विषयों को ही उद्धृत नहीं करते, अपितु संपूर्ण भारत में पर्यावरण के विषय को भी समझाते हैं। जिसको श्रेष्ठतम स्तर पर लाने के लिए सिर्फ मानव जाति ही नहीं, बल्कि वहां के पशु, पक्षी भी वातावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने में समान भूमिका निभाते थे। अतः लेख में उल्लेखित विवरण से स्पष्ट होता है की। रामायण काल में पर्यावरण अपने उन्नत स्थिति में था। मानव जाति द्वारा वर्तमान समय में पर्यावरण को हानी पहुंचाई जा रही है। जिससे मानव जीवन पर अनेकों संकट आ रहे हैं। आवश्यकता है कि हम सिख ले इस महाकाव्य से और अपने जीवन को सुखमय बनाएं। प्रस्तुत लेख ''वाल्मीकि रामायण में पर्यावरणः एक अन्वेषण'' पर आधारित है।

मुख्य बिंदु – पर्यावरण, रामायण, चित्रकूट, पर्वत एवं नदी, वन, जीव–जंतु, पेड़–पौधे।

Introduction

वाल्मीकि ने अपने श्रेष्ठ कृति रामायण में स्पष्ट रूप से लिखा है कि – ''बिना प्राकृतिक संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता है क्योंकि इस संपूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है।'' प्रस्तुत लेख ''वाल्मीकि रामायण में पर्यावरणः एक अन्वेषण'' में पर्यावरण शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा तथा पर्यावरण का मानव जीवन में उसके महत्व को निरूपित करता है। लेख में रामायण में वर्णित प्रायद्वीपीय वनों की वर्तमान स्थिति को उजागर किया गया है। इसमें उस समय में उपस्थित पर्वतों एवं नदियों का विवरण दिया गया है। रामायण में वर्णित विभिन्न प्रजाति के जीव–जंतु एवं पेड़–पौधों का उल्लेख किया है। रामायण में वर्णित विभिन्न प्रकार की औषधि गुणों वाले पौधों एवं पवित्र माने जाने वाले पौधों का उल्लेख है। लेख में मूल तत्व एवं वास्तविकता को मूल रूप देने हेतु उस समय के प्रसंगों को मूल रूप का यथोचित विवरण दिया गया है। लेख में वाल्मीकि रामायण में वर्णित पर्यावरण को उजागर किया गया है।

पर्यावरण शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'वृ' धातु में 'परि' तथा 'आ' उपसर्ग एवं 'ल्यूट' प्रत्यय जोड़ने से बना हैं, अर्थात परि़ + आ़ + वृ + ल्यूट = पर्यावरण। 'परि' का अर्थ है चारों ओर फेंकना, सब ओर से फैलाना, प्रसार करना, फैला देना, घेरना।[1] आवरण का अर्थ है ढ़कना, छुपाना, मूंदना, घेरना, बंद करना, चाहर दिवारी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

इत्यादि।[2] पर्यावरण का अर्थ है अंग्रेजी शब्द (एनवायरनमेंट) का अर्थ भी पर्यावरण, वातावरण व पारिस्थिति है। कुछ वैज्ञानिकों ने एनवायरनमेंट शब्द के स्थान पर (नबितत) शब्द या मिलिएव शब्द का प्रयोग वातावरण के लिए किया अभिप्राय भी समस्त परिस्थितियों प्रवृत्ति से है।[3] पर्यावरण का शब्द कोशीय अर्थ होता है आसपास या आस–पड़ोस (सरौनडिंग) पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ अंग्रेजी भाषा के इकोलॉजी (पर्यावरण) की एतिमोलॉजी अर्थात व्युत्पत्ति (वाड्मय, मूल प्रयोग आदि) पर दृष्टि डाले तो अंग्रेजी भाषा में एक ग्रीक भाषा के शब्द वयिकोसोलोजी से आया है, जिसका अर्थ है वोयिकस अर्थात निवास स्थान वोलोजी अर्थात निरीक्षण–अध्ययन, अनुसंधान कर उसके विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करना। अतः पूरे शब्द जो इकोलॉजी के विश्व प्रसिद्ध शब्द का मूल है, अर्थ है अपने निवास स्थान का अध्ययन, जहां पर हम रहते हैं, यह मौलिक अर्थ है ग्रीक शब्द का जहां से अंग्रेजी भाषा का शब्द इकोलॉजी आया हैं।[4] पर्यावरण की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने पर्यावरण को विविध दृष्टिकोण से देखते हुए अनेक प्रकार से परिभाषित किया है –

अमेरिकन मानव शास्त्री हर्षकोविट्स के अनुसार –'' वातावरण उन बाहरी दशाओं और प्रभाव का योग है जो प्राणी की जीवन और विकास पर प्रकाश डालते हैं।[5]

बेवेस्टर शब्दकोश में पर्यावरण की परिभाषा –''वातावरण से आशय से उन घेरे में रहने वाले परिस्थितियों, प्रभाव और शक्तियों से है जो रासायनिक और सांस्कृतिक दशाओं जैसे (रीति–रिवाज, कानून, भाषा, धर्म एवं आर्थिक, राजनीतिक संगठन) के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं।[6]

विश्वकोश पर्यावरण को परिभाषित करता है '' ''एनवायरनमेंट इन बायोलॉजी द इंटर रेंज आफ एक्सटर्नल इन्फ्लुएंसेस एक्टिंग ऑन एन आर्गनिज्म बोथ द फिजिकल एण्ड द बायोलॉजिकल (आई. इ. अदर आर्गनिज्म) फोर्सेस आफ नेचर सराउंडिंग एन इंडिविजुअल'' [7]

मानव जीवन में पर्यावरण का महत्व

स्पष्ट है कि पंचतत्व से निर्मित प्रत्येक प्राणी की मन मस्तिष्क की शांति हेतु तथा स्वस्थ शरीर और उसके प्रेय एवं श्रेय के लिए प्रकृति और उसके समस्त उपादान ' क्षिति, जल, अग्नि, अंतरिक्ष, वायु आदि पर्यावरण की पावनता से उपेत हो तथा स्वयं की संपन्नता से सुसज्जित होकर मानव समाज को शांति संपन्न बनाने में अपना शोभन सहयोग प्रदान करें। वैदिक ऋषि पंचतत्व के पावित्र हेतु सर्वप्रथम मानव मन को ही पवित्र एवं शिव संकल्प युक्त होने के लिए परमात्मा के समक्ष प्रणत हैं ।[8] ऋग्वेद में वर्णित पर्यावरण संदर्भ –– प्रभु प्रातः काल जब हम आंखों खोलें, तब पृथ्वी लोक व द्युलोक हमारे लिए सूखकारी हो, जब हम अंतरिक्ष की ओर आंखें उठा कर देखे तो अंतरिक्ष भी हम पर सुख की वर्षा करें, पृथ्वी की संपूर्ण वनस्पति हमारे लिए मंगलकारी हो। हे विश्वपते आपकी कृपा हमारे ऊपर ऐसी हो की हम भी शुभ कार्य करें और हमारे चारों ओर सुख की वर्षा होती रहे।[9] पर्यावरण की पवित्रता पंचतत्व एवं उनके उपादानों की पवित्रता पर निर्भर है। इसके लिए मानव मन का पवित्र एवं शिव होना निश्चित ही परमआवश्यक है। मानव की अंतः करण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) निष्काम तथा निर्मल होने पर ही सामाजिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण का पावन रखने में सक्षम होते हैं।[10] मानव का निष्काम भाव उसके मन को तो निश्चल, निर्मल एवं पावन बनाता ही है। साथ ही उसका अमल मन के अपने समस्त व्यावहारिक परिसर को अपने सुदृ ष्टि और सदाचारण तथा सत्कर्म से परम शांत एवं परम पावन बनाने में सहज सहयोग प्रदान करता है। इसलिए सामाजिक एवं प्राकृतिक पर्यावरण की पावनता हेतु मानव मन के निर्मलता का विशेष महत्व हैं।[11]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

रामायण में वर्णित पर्वत और नदियां

वाल्मीकि ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण में विभिन्न पर्वतों और नदियों का उल्लेख किया है, एवं उसकी विशेषताओं के बारे में बताया है।

पर्वत

प्रभु श्री राम वनवास यात्रा के दौरान जब चित्रकूट पर्वत पर पहुंचते हैं और वहां की प्राकृतिक दृश्य का अवलोकन करते हैं। तो उसका वर्णन बहुत मनोहारी है। कुछ पर्वत शिखर चांदी के समान श्वेत वर्ण के हैं, कुछ रुधिर के समान रक्त वर्ण के हैं, कुछ इंद्र नीलमणि के समान कृष्ण वर्ण के बताएं हैं। और इनके शिखर पक्षियों से युक्त बताएं हैं, कुछ पर्वत शिखर पुखराज अथवा स्फटिक मणि के सामान प्रकाशित होते हैं।[12] इनमें चित्रकूट, प्रस्त्रवणगिरी, विंध्य, महेंद्र, मैनाक, अरिष्ट, सुवेल, हिमालय, कैलाश, त्रिकूट, सुदामा, मलय, ऋषभ, उदय, पुष्पिक, वैद्युत, कुन्जर, सोमगिरि, चक्रवान, वराह, वज्र, मेरु, मेघा गिरी, अस्ताचल, काल, देवसख, क्रौंचगिरी, रजत और शिशिर पर्वत आदि पर्वतों की महत्ता को बताया गया हैं।[13] कुछ मुख्य पर्वत –

उदयाचल – वामन अवतार में विष्णु ने त्रैलोक्य को नापते समय इस पर अपना पहला पैर रखा था।[14] कोष के अनुसार यह पर्वत पूर्व दिशा में विद्यमान है जहां से सूर्य और चंद्रमा का उदय माना जाता है।[15]

सुदामा पर्वत – केकय प्रदेश से चलकर उत्तर पूर्व में वाहलिक प्रदेश से आगे सुदामा पर्वत स्थित था जिसे भरत अयोध्या लौटते हुए पार करते हैं।[16]

माल्यावन पर्वत – यह दक्षिण दिशा में विद्यमान था। जो किष्किंधा के समीप प्रस्तावना–पर्वत–माला का एक शिकार भाग था। इसी शिखर पर राम–लक्ष्मण अपना निवास स्थान बनाते हैं।[17] सुदर्शन, मानस, वारह, काल, परियात्र, चक्रवान, पद्माचल, मंदराचल, शिशिर और क्रौंचगिरी आदि पर्वतों पर सुग्रीव वानरों को सीता के अन्वेषण का आदेश देते हैं।[18]

नदियां

पर्वतों के साथ–साथ वाल्मीकि ने अपने रामायण में नदियों का भी उल्लेख किया हुआ है। तमसा, गंगा, यमुना, सरयू, मंदाकिनी, गोदावरी, नर्मदा, सोन नदी, शोणभद्र ,कौशिकी, तुंगभद्रा, गोमती, ताम्रवर्णी, शैलोदा, कावेरी और अशोक वाटिका स्थित नदी आदि नदियों का विशेष वर्णन मिलता हैं।[19] इसी तरह भागीरथी, कौशिकी, यमुना, सरस्वती, शोणभद्र, माही तथा कालमही आदि नदियों का वर्णन सीता अन्वेषण प्रसंग में किया गया हैं।[20] इस तरह रामायण में पर्वत और नदी तंत्र एक शुद्ध पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

राम के वनवास यात्रा में मिले वन :

महाकाव्य रामायण में वनों का विस्तार से वर्णन किया गया है। विभिन्न वनस्पतियों से जैसे–जैसे राम यात्रा करते हैं अयोध्या से लंका तक चित्रकूट से होते हुए दंडक–अरण्य पंचवटी, किष्किंधा, लंका और यहां तक की हिमालय पर्वत भी ''कैलाश से परे'' स्थित है, जहां से हनुमान प्रसिद्ध संजीवनी लाए थे। स्पष्ट है कि महाकाव्य केवल भूमि और उसके बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्ति द्वारा लिखी गई है।[21] रामायण में वन को शांत, मधुर और तृष्णायुक्त बताया गया है, जो चार भावनाओं को दर्शाते हैं पूरे वन पर्यावरण पर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

हावी हैं।[22] रामायण में प्रकृति की सर्वोच्चता का वर्णन मिलता है। इसका दायरा आधुनिक उत्तर–प्रदेश की अयोध्या से लेकर श्रीलंका तक फैला हुआ है। जो चार प्रमुख पारिस्थितिक तंत्र को दर्शाता है। उष्णकटिबंधीय पर्णपाति वन, शुष्क और नम पर्णपाती वन, हिमालयी अल्पाइन वन, लंका के सदाबहार वन। [23]

उष्णकटिबंधीय पर्णपाति वन :

राम वनवास के प्रथम चरण के दौरान ऋषि भारद्वाज ने उनको वन में बसने की सलाह दी थी। चित्रकूट वन जो प्रयाग से दसकोस की दूरी पर स्थित है।[24] इसके उत्तर में मंदाकिनी नदी बहती है।[25] इस वन में चारों तरफ सुंदर पुष्पो से लदे वृक्ष है। जैसे आम, बिल, कटहल, बेर, हरण जो खाने योग्य थी। लोधरा, निपटा, तिलका (चावल) जैसे फूल वाले पेड़ शामिल है। पांच औषधि में श्वेतकंठककारी, ब्राह्मी, कटुका, अतिविसा और हिलामोसीका हैं।[26] राम का अगला पड़ाव दंडक– अरण्य था। जहां राम ने एक आश्रम का निर्माण किया था। इस नाम का वन वर्तमान मध्य प्रदेश, उड़ीसा और झारखंड के कुछ हिस्सों में स्थित है। जहां उच्च वन वृक्षों, पवित्र वृक्षों और मीठे फल देने वाले वृक्षों से भरपूर है।[27]

उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाति वन :

अगला पड़ाव पंचवटी है जहां से सीता माता का अपहरण किया गया था। यह पंचवटी नदी पर स्थित है। वहां एक जंगली मैदान था, जिसे साम कहा जाता था। जिसमें फल देने वाले फूलदार सुगंधित और लकड़ी वाले पेड़ों की प्रजातियां थी इस क्षेत्र में जौ गेहूं और सालीचावल (शीतकालीन चावल) जैसे अनाज का भी उल्लेख किया गया है।[28]

शुष्क एवं नमपर्णपाति वन :

सीता की खोज में भटकते हुए राम और लक्ष्मण की कबंध से मुलाकात हुई, जिसने उन्हें पश्चिम दिशा पम्पा सरोवर की और निर्देशित किया। वर्तमान में आधुनिक कर्नाटक राज्य के बेलारी जिले में स्थित है। जलवायु विशेष रूप से चौत्र माह में (मार्च से अप्रैल) बहुत सुखद था। यहीं पर राम–लक्ष्मण की मुलाकात हनुमान और सुग्रीव से होती है, और सीता को खोजने में मदद करते हैं। यहां पर फलदार वृक्ष पाए जाते हैं।[29]

हिमालयी अल्पाइन क्षेत्र के वन :

यह एक विशाल भूभाग है जो दो पहाड़ी कैलाश और ऋषभ के बीच स्थित बताया जाता है।[30] ट्रांस हिमालयी क्षेत्र में तीन संयुक्त पर्वत है कैलाश, ऋषभ और महोदय (औषधि पर्वत)। रामायण में उल्लेख है कि राम और रावण के सेना के बीच युद्ध में झड़प के दौरान लक्ष्मण जब मूर्छित हो गए, तब वैद्य सुषेण के कहने पर हनुमान द्रोणगिरी पहाड़ी पर पहुंच कर,औषधि पौधे लाते हैं। अमृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सुवर्णकरणी और संधानी ।[31]

लंका का सदाबहार वन :

इसे ग्रीनवुड के नाम से भी जाना जाता है। यहां के वनों को दो भागों में बांटा गया है। पहले प्राकृतिक वन में वन चट्टानी पौधे, पर्याप्त जल स्रोत और उनकी जैव विविधता है। प्राकृतिक वनों में सबसे अच्छा वर्णन अशोक वाटिका के चित्रमय वर्णन में किया गया है। दूसरा प्रकृतिककृत वन जो कि बड़े खुले भूभाग में पाए जाते हैं।[32]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

रामायण में पवित्र पौधे इनकी पूजा का कई बार उल्लेख है, तुलसी, पीपल, बरगद और भारतीय आंवला जैसे पेड़ हैं।[33]

रामायण में वर्णित पशु

वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण में पौधों की तरह ही जीव–जंतु–पशु–पक्षियों का भी विस्तार से वर्णन किया है।[34] इसका एक अच्छा उदाहरण राम द्वारा सीता को दि जाने वाली चेतावनी में है कि आगे अनेक खतरे होंगे। जंगलों में शेर सांप बिच्छू जैसे जंगली जानवर और कटीली झाड़ियां प्रचुर मात्रा में है।[35] यहां जीव जंतु और पादपों का सटीक वर्णन मिलता है।

चित्रकूट पहाड़ी और वन में पशु

जहां तक जीव जंतुओं का प्रश्न है वाल्मीकि ने स्पष्ट किया है मांसाहारी और शाकाहारी दोनों है। हाथी, विभिन्न प्रकार के हिरण, भालू, बंदर, बाघ, चीता, का विशेष उल्लेख मिलता है। हिरण जंगल में पाया जाने वाला आम जानवर था। पक्षियों में मोर, कोयल और छोटा पक्षी शामिल है। विभिन्न जलीय पक्षियों जैसे रंगथा, कारंदव, क्रौंच, प्लाव, हम्सा और नट्यूहा के साथ–साथ अधिक कोयल और काकोर जैसी सामान्य प्रजातियां, जो मधुर पृष्ठभूमि प्रदान करती थी। ये सब चित्रकूट पहाड़ी में मिलते हैं। चित्रकूट वन में जिन जानवरों का उल्लेख मिलता है उनमें गोलंगुला/गोबर (गाय), पूंछदार बंदर, कारंदव, कोयस्थि, क्रौंच, महिषा, प्रिसाटा, ऋक्ष, कोयल, मयूर, सियारासा जैसे प्रवासी पक्षी। अनेक जालीय और स्थलीय पौधों का वर्णन किया है। वाल्मीकि एक प्रखर वनस्पतिशास्त्री के साथ एक प्राणीशास्त्री भी थे।[36]

दण्डक – अरण्य के पशु :

इस क्षेत्र में वाल्मीकि ने विविध और असंख्य जानवरों का उल्लेख किया है। जैसे हाथी, हिरण, प्रिसाटा, ऋक्ष, सरसा, सिम्हा, व्याघ्र, स्मार (जंगली सूअर), तारकसु (लकड़बग्घा), वानर, वराह, वृका (भेड़िया), द्विपी (पैंथर) और गोकर्ण, मृगा और गोलांगुला का उल्लेख किया है। पक्षियों में मयूर, सारस, जलीय रथांग, कारंदव, क्रौंच, प्लाव, हंस, नट्यूहा, गीद्ध, झिलिका आदि का भी उल्लेख है। वाल्मीकि के समय यहां बाघ और शेर रहते थे। यह तथ्य यहां के भीमबेटका में प्राप्त शैलचित्रों से प्रमाणित होता है।[37]

पंचवटी के पशु :

यह आधुनिक गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। वाल्मीकि ने यहां के विविध प्रकार की पशु – पक्षियों की प्रजातियों का वर्णन किया है। इनमें हंस, कारंदव, क्रौंच, मयूरा, मृग, सारस भी सामिल हैं।[38]

किष्किंधा वन में पशु :

इस क्षेत्र में आम तौर पर पायी जाने वाली प्रजातियों में हंस, बत्तख, क्रौंच, ओस्प्रे और अन्य जलपक्षी है। वक्रतुंडा (नाक वाली मछली, सुंघने वाला सिंसुमार गर्रा मुल्तानी), रोहिला और नलमीना सरोवर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।[39]

लंका सदाबहार वन के पशु :

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

यहां पाए जाने वाले सामान्य पशु और पक्षी प्रजातियों में, कोकिला, मयूर, मृगा चक्रवाक, हम्सा, सरसा, बत्तख, चक्रा और नट्यूहा हैं।[40]

वाल्मीकि जी ने रामायण में अपने समय की पशु प्रजातियों की महान विविधता का अध्ययन और दस्तावेजीकरण किया है। इन्होंने ने प्रत्येक प्रजाति के जानवरों की गणना की है। यह स्पष्ट है कि वह जानते थे। मछली, कीड़े या सरीसृप की तुलना में पक्षियों और स्तनधारियों के बारे में अधिक जानकारी हैं।[41]

निष्कर्ष :

भारत के प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण जो कि महर्षि वाल्मीकि की महान कृति मानी जाती है, में पर्यावरण का जो चित्रण किया गया वह प्रकृति की मनोरम दृश्य को उजागर करता है। रामायण प्राचीन भारतीय इतिहास की एक अमूल्य धरोहर में अपना स्थान रखने वाला ग्रंथ है। जिसमें प्रकृति की प्रशंसा स्वयं प्रभु श्री राम अपने मुख से करते है। उसमें पर्वतों की सजीवता का अद्भुत चित्रण किया गया है। नदियों के कलरव का उद्दात वर्णन मिलता है। विभिन्न पशु–पक्षियों से सुसज्जीत वनों का उल्लेख बहुत ही मनोहारी है। रामायण में जिन पौधों की पवित्रता के बारे में बताया गया है भारतीय समाज में उन्हें आज भी पूजा जाता है। प्रकृति की दिव्यता एवं भव्यता का ऐसा सौंदर्य वर्णन हमें केवल वाल्मीकि रामायण में ही देखने को मिलता है। इसमें पर्यावरण की स्वच्छता एवं सुंदरता का वर्णन किया गया। रामायण में प्रकृति का जो चित्रांकन किया गया वह महर्षी वाल्मीकि को एक प्रखर वनस्पतिशास्त्री के साथ–साथ एक प्राणीशास्त्री भी बनाते हैं।

सन्दर्भ :

1. संस्कृत हिन्दी शब्दकोष – वामन शिवराम आप्टे, पृ. 580
2. संस्कृत हिन्दी शब्दकोष – वामन शिवराम आप्टे, पृ. 162
3. भौगोलिक विचारधाराएं एवं विविधतंत्र – एस. डी. कौशिक
4. मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन – स्टाकहोम 14 जून 1972
5. भौगोलिक विचारधाराएं एवं विविधतंत्र – एस. डी. कौशिक
6. बेवेस्टर शब्दकोश – उद्धृत – भारत का आर्थिक एवं वाणिज्य भूगोल – के. जी. जौहरी
7. द न्यू इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (माइक्रोपिडीया वोल्यूम थर्ड)
8. वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चेतना – डॉ. अंजना सिंह चौहान
9. ऋग्वेद 7/35/05
10. वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चेतना – डॉ. अंजना सिंह चौहान
11. गीता 3–37
12. वाल्मीकि रामायण 2/94/4,5–6
13.वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चेतना – डॉ. अंजना सिंह चौहान
14. वाल्मीकि रामायण 439/45–54 तक
15. उदयगिरवनालीबालमंदार पुष्पम ।। उद्भट संस्कृति हिंदी शब्दकोष, वामन शिवराम आप्टे
16. वाल्मीकि रामायण 2/62/12

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

17. वाल्मीकि रामायण 4/27/52
18. वाल्मीकि रामायण 439/24–26 4/42/27–28 तक
19. वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चेतना – डॉ. अंजना सिंह चौहान
20. वाल्मीकि रामायण 440/20–22
21. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमरिथलिंगम मुरुगेशन
22. लुटेनडोर्फ, पी., 2001 '' शहर, जंगल और ब्रह्मांडः पारिस्थितिकी दृष्टिकोण से संस्कृत महाकाव्य'', हिंदू धर्म और परिस्थितिकी, संपादकः क्रिस्टोफर चौपल , की और टकर, मैरी एवलिन, पृ . 276–278, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
23. राय , मिरा , 2005 , '' रामायण में पर्यावरण और परिस्थितिकी'', इंडियन जर्नल ऑफ ऐतिहासिक विज्ञान, खंड 40, संख्या 1, पृ. 9–29
24. वाल्मीकि रामायण 2/54/27/25 वाल्मीकि रामायण 2/93/8, 2/92/11
26. वाल्मीकि रामायण 254/29, 2/94/4–13, 2/94/18
27. वाल्मीकि रामायण 2ध1ध5
28. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
29. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
30. युद्धकाण्ड 7/4/30 – 31/61–13
31. युद्धकाण्ड 74/31–33, 101/31–33
32. वाल्मीकि रामायण 6/74/29–3433. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
34. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
35. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
36. अयोध्या काण्ड 28
37. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
38. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
39. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
40. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन
41. वाल्मीकि रामायण में वनस्पति विविधता अमिरथलिंगम मुरुगेशन